

# डॉ. जॉन ओसवाल्ट, राजा, सत्र 17, भाग 1

## 2 राजा 1-2, भाग 1

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

राजाओं की पुस्तकों के हमारे अध्ययन की निरंतरता में आपका स्वागत है। आज, हम प्रथम राजाओं से द्वितीय राजाओं की ओर जा रहे हैं। जैसा कि मैंने पिछले सत्र में उल्लेख किया होगा, सबसे स्पष्ट प्रमाण कि ये वास्तव में एक पुस्तक हैं, इस तथ्य में देखा जाता है कि इस्राएल के राजा अहज्याह का वृत्तांत, उत्तरी राज्य, प्रथम राजाओं के अध्याय 22 के अंत में शुरू होता है, वहाँ श्लोक 51 से शुरू होता है, और फिर कहानी अध्याय 2, क्षमा करें, पुस्तक 2, और अध्याय 1 में जारी रहती है, और हमारे पास अध्याय 1, श्लोक 18 में अहज्याह की कहानी का निष्कर्ष है। इसलिए, दोनों का पृथक्करण पूरी तरह से यांत्रिक है, विषय-वस्तु से इसका कोई लेना-देना नहीं है।

आइए शुरू करते समय प्रार्थना करें।

प्रिय स्वर्गीय पिता, हम आपको विश्व इतिहास की घटनाओं के प्रभारी होने के लिए धन्यवाद देते हैं। आपका धन्यवाद कि जब हम महामारी का सामना करते हैं, जब हम चुनावी उलझनों का सामना करते हैं, जब हम विभिन्न मुद्दों का सामना करते हैं, तो हम आप पर भरोसा कर सकते हैं, कि आप सभी चीजों के पीछे की शक्ति हैं। हम आज हमारे अध्ययन में इसके प्रमाण के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें इसकी सच्चाई बताएँ, हम पर इसकी सच्चाई लागू करें, हमें यह भरोसा दिलाएँ कि आप वाकई राजा हैं। आपके नाम में, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

हमारा पहला भाग एलिय्याह और अहज्याह है, जो पहले राजा 22, 15 से शुरू होता है और दूसरे राजा, अध्याय 1, श्लोक 18 तक जारी रहता है। अध्याय 22 के अंत में उस अंतिम परिचयात्मक पैराग्राफ में, हमने अहज्याह को एक विशिष्ट तरीके से पेश किया है, कि उसने प्रभु की नज़र में गलत किया।

लेकिन यहाँ एक नया मोड़ है। अब तक, यह रहा है कि, वह नबात के बेटे यारोबाम के पदचिन्हों पर चलता था, यानी, वे यहोवा की पूजा मूर्तिपूजक तरीके से करते थे। उन्होंने दक्षिण में बेतेल और उत्तर में दान में सोने की मूर्तियाँ बनवाई थीं, एक बैल की मूर्तियाँ, जो शक्ति का प्रतीक हैं, उर्वरता का प्रतीक हैं, उन सभी चीजों का प्रतीक हैं जो पृथ्वी वास्तव में मानव जीवन पर ला सकती हैं।

लेकिन, बेशक, यही समस्या है। यहोवा इस धरती की शक्ति का प्रतिनिधि नहीं है। यहोवा इस धरती की शक्ति का स्रोत है।

वह सृष्टि से परे रहता है। वह सृष्टि का हिस्सा नहीं है। इसलिए यारोबाम ने उन्हें मूर्तिपूजा के पाप में धकेल दिया।

और जैसा कि मैंने इस अध्ययन में पहले कहा है, इसके बहुत बड़े निहितार्थ हैं। यहोवा के बारे में उल्लेखनीय बात, जैसा कि बाइबल में उसका वर्णन किया गया है, यह है कि वह पारलौकिक है। वह इस सृष्टि से अलग है।

एक बार जब आप इसे स्वीकार कर लेते हैं, तो सभी तरह की चीजें अपने आप सामने आ जाती हैं। हमारे पास अब उन चीजों को आगे बढ़ाने का समय नहीं है, लेकिन एक बात यह है कि अगर ब्रह्मांड के बाहर किसी निर्माता ने ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाया है, तो सृष्टि में उद्देश्य है। इसलिए, वह उद्देश्य बाइबिल की समझ के माध्यम से चमकता है।

मोक्ष की संभावना है। यानी हम अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठ सकते हैं। हम अपने पर्यावरण से ऊपर उठ सकते हैं।

हम मुक्ति पा सकते हैं। ये पारलौकिकता के सिर्फ़ दो निहितार्थ हैं। तो मूर्तिपूजा का यह मुद्दा सिर्फ़ एक सवाल नहीं है, ठीक है, या तो आप भगवान की मूर्ति बनाते हैं या फिर मूर्ति नहीं बनाते।

मोक्षहीन चरित्र का हिस्सा बनाते हैं, या आप उसे इस संसार से बिल्कुल अलग होने देते हैं। और उसके महान दिव्य उद्देश्य में, हम पर परिवर्तन की संभावना लाते हैं।

यारोबाम ने यही किया। लेकिन अगर आप यहाँ अहज्याह के वर्णन को देखें, तो आप पाएँगे कि कुछ और भी कहा गया है। यह श्लोक 52 है।

उसने यहोवा की नज़र में बुरा किया क्योंकि उसने अपने पिता और माँ और नबात के बेटे यारोबाम के तौर-तरीकों का अनुसरण किया। तो, यहाँ एक नया तत्व जुड़ गया है। अहज्याह के पिता और माँ, अहाब और ईज़ेबेल का पाप क्या था? वास्तव में, यह केवल यहोवा की मूर्तिपूजा करना नहीं था।

वास्तव में, यह यहोवा को हटाकर उस ईश्वर को लाना था, जो प्रजनन के कनानी ईश्वर, बाल देवता थे। इसलिए, हम देखते हैं कि यहाँ न्याय का एक नया मानक आया है और एक नया संकट आया है। जैसा कि मैंने आपको बताया, एलिय्याह और एलीशा का मंत्रालय, दो चरणों में एक ही मंत्रालय, इस प्रश्न पर केंद्रित था: क्या यहोवा, वास्तव में, विस्थापित होने जा रहा है? न केवल इस दुनिया में घसीटा जाएगा, बल्कि वास्तव में, इस दुनिया से बाहर निकाला जाएगा, उस संकट को शेल्फ पर रख दिया जाएगा जो हमारे साथ यहाँ है।

तो, हम अहज्याह को देखते हैं। ध्यान दें कि उसने बहुत कम समय तक शासन किया। अब, फिर से, हमने कालक्रम के बारे में बात की है।

हो सकता है कि उसने एक साल से थोड़ा ज़्यादा ही शासन किया हो, लेकिन उसने दो साल के कुछ हिस्सों के लिए शासन किया। और इसलिए, रिपोर्ट में कहा जाएगा कि उसने दो साल तक शासन किया, लेकिन सिर्फ़ दो साल। फिर, अध्याय एक की शुरुआत में हमें बताया गया कि वह अपने महल में एक जालीदार ढांचे से गिर गया और घायल हो गया।

यह हमें उत्तरी राज्य के पहले राजा यारोबाम की याद दिलाता है, जिसका सबसे बड़ा बेटा बीमार हो गया था। यारोबाम ने अपने अभिषेक करने वाले नबी, यहोवा के नबी अहियाह को यह जानने के लिए भेजा कि उसका बेटा ठीक हो सकता है या नहीं। ध्यान दें कि अहज्याह क्या करता है।

अहज्याह ने एक्रोन के देवता बालज़ेबूब को भेजा। एक्रोन फिलिस्तीन में से एक है, फिलिस्तीन के शहरों में से एक है। तो, यह केवल कनानी देवता बाल नहीं है, और यह एक फिलिस्तीन शहर में कनानी देवता बाल है।

इसलिए, वह इस्राएल में यहोवा के किसी नबी को नहीं भेज रहा है। वह फिलिस्तिया में बाल के किसी नबी को भेज रहा है। फिर से, इस्राएल में अहाब और ईज़ेबेल के शासन के इन वर्षों में जो कुछ हुआ है, उसका एक संकेत।

वे दूर चले गए हैं। और इसलिए, आपके पास एलिय्याह की नाटकीय प्रतिक्रिया है। ये लोग सड़क पर हैं, इस बुतपरस्त देवता से पूछने के लिए फिलिस्तिया की ओर लगभग 45 या 50 मील की दूरी पर जा रहे हैं।

और एलिय्याह उनसे मिलता है और कहता है, क्या इस्राएल में कोई ईश्वर नहीं है? क्या तुम्हें बुद्धि मांगने के लिए किसी विदेशी राष्ट्र में किसी विदेशी देवता के पास जाना होगा? अब, हम इस ईश्वर के बारे में इस नाम से ज़्यादा कुछ नहीं जानते। जैसा कि मैंने बताया, अगर आपको स्टडी गाइड मिल गई है, तो ज़ेवुव हिब्रू में एक शब्द है जिसका मतलब है एक मक्खी, एक मक्खी। तो, यह मक्खियों का बाल है, मक्खियों का स्वामी, जिसने, निश्चित रूप से एक उपन्यास को शीर्षक दिया जिसे हम शायद पिछले सालों में याद करते हैं।

वह केवल नए नियम में फिर से दिखाई देता है जब यहूदियों के शासकों ने यीशु पर बेलज़ेबूब का सेवक होने का आरोप लगाया, जो इस समय तक यहूदी परंपरा में शैतान, बुरे देवता का प्रतिनिधित्व करने के लिए आया था। तो, यह दिलचस्प है; शायद यह बाल ज़ेवुव मृत्यु का देवता है, मक्खियाँ जो एक लाश के चारों ओर इकट्ठा होती हैं। और शायद इसीलिए यह सवाल उससे पूछा जा रहा है।

हम निश्चित रूप से नहीं जानते। लेकिन मुख्य बात यह है कि वह यहोवा नहीं है, और वह उनसे मिलने के लिए यहोवा की भूमि में भी नहीं है। इसलिए, दिलचस्प बात यह है कि आप कभी भी परमेश्वर से बच नहीं सकते।

अहज्याह ने यहोवा के बारे में नहीं सोचा। उसने एलिय्याह से सलाह लेने के बारे में नहीं सोचा। मुझे लगता है कि यह बात उसके दिमाग में कभी नहीं आई।

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, आप उससे बच नहीं सकते। सालों बाद, यहूदा में, एक राजा जिसका नाम भी यही था, आहाज, जो अहज्याह का संक्षिप्त रूप है, अपने उत्तरी पड़ोसियों के खतरे के कारण अपने शहर को मजबूत करने का प्रयास कर रहा था। उसने परमेश्वर से सलाह नहीं ली थी, परमेश्वर से नहीं पूछा था कि वह क्या करना चाहता है, परमेश्वर का दृष्टिकोण क्या है, यह नहीं पूछा था।

लेकिन यहाँ यशायाह आया। आप यहोवा से बच नहीं सकते। आप सोच सकते हैं कि आप इस जीवन में उससे बच गए हैं, लेकिन अंत में, आप उससे मिलेंगे।

मैं उससे मिलूँगा। तुम उससे बच नहीं सकते। और इसलिए, वे लोग अहज्याह के पास वापस चले गए।

और उसने कहा, तुम इतनी जल्दी वापस क्यों आ गए? और उन्होंने कहा, अच्छा, हम इस आदमी से सड़क पर मिले थे। और उसने कहा, क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं है? शायद हमें इस्राएल में परमेश्वर से पूछना चाहिए, राजा। और अहज्याह ने कहा, तुम कैसे दिखते हो? और उन्होंने उसे एक बालों वाले आदमी के रूप में वर्णित किया, जिसकी कमर के चारों ओर चमड़े की बेल्ट थी।

और उसने कहा, ओह, वह एलिय्याह है। तो, जब यहोवा से तुम्हारा सामना होता है तो क्या होता है? क्या तुम पश्चाताप करते हो? क्या तुम उस पर विश्वास करते हो? क्या तुम कहते हो, ओह, मैंने दुनिया में क्या किया है? भगवान मुझ पर दया करें। नहीं, तुम उसे पकड़ने के लिए एक सैन्य टुकड़ी भेजते हो।

अहज्याह एलिय्याह को मारने जा रहा था। यही तो हो रहा है। राजा उसे पकड़कर मार डालने वाला है।

वह अपने देश में इस गैडफ्लाई से छुटकारा पाने जा रहा है। और इस तरह, आप एक दिलचस्प कहानी देखते हैं जो विकसित होती है। 50 आदमियों का कप्तान एलिय्याह के पास गया, जो एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा था।

यह श्लोक नौ है। और उससे कहा, परमेश्वर के जन, राजा कहता है, नीचे आओ। अब, यह एक बहुत ही दिलचस्प वाक्यांश है।

एलिय्याह और एलीशा की कहानियों में इन दोनों लोगों को हमेशा ईश्वर का आदमी कहा जाता है। उन्हें कभी-कभी ही भविष्यवक्ता कहा जाता है। भविष्यवाणी करने का मुद्दा इतना बड़ा मुद्दा नहीं है।

यह उनके चरित्र, उनके स्वभाव और उनके रिश्ते का मुद्दा है। यह व्यक्ति कौन है? वह ईश्वर का आदमी है। खैर, इससे उस कप्तान को थोड़ी चिंता होनी चाहिए थी।

भगवान का आदमी। लेकिन कप्तान राजा अहज्याह का सेवक है। यहाँ जो हो रहा है वह दो राजाओं के बीच संघर्ष है।

राजा कौन है? यहोवा और उसका दूत यह परमेश्वर का आदमी है। या अहज्याह राजा है, और उसका दूत यह सैनिक है? एलिय्याह कहता है, ठीक है, अगर मैं परमेश्वर का आदमी हूँ, तो स्वर्ग से आग बरसने दो।

यह समझ में आता है, है न? बाल और यहोवा के बीच, दो देवताओं के बीच संघर्ष का क्या सबूत था? यहोवा के हाथ से आग इन लोगों पर गिरी। अब, दो राजाओं के बीच संघर्ष में, आग गिरती है, और वे मर जाते हैं। क्या यह दिलचस्प नहीं है कि कैसे पाप हमारी धारणा को नष्ट कर देता है? माउंट कार्मेल पर, जब आग गिरी, तो लोग अपने चेहरे के बल गिर गए और कहा, यहोवा ईश्वर है।

अब, क्या हुआ? तो, श्लोक 11 में, राजा ने 50 आदमियों के एक और कप्तान एलिय्याह को भेजा। ओह! खैर, वह राजा है।

वह कहता है, जाओ। तो, मैं जाऊंगा। और अब कप्तान ने उससे कहा, भगवान के आदमी, राजा यह कहता है।

तुरंत नीचे आ जाओ। हमने इसे सख्त कर दिया है। पहले आदमी ने कहा कि राजा कहता है, नीचे आ जाओ।

यह कहता है कि राजा कहता है, अभी नीचे आओ। अगर मैं ईश्वर का आदमी हूँ, एलिय्याह ने जवाब दिया, तो स्वर्ग से आग बरसेगी। फिर से, पाप आपको गूंगा बनाता है।

इसलिए, उसने एक तीसरा आदमी भेजा, लेकिन यह आदमी उसके राजा से थोड़ा ज्यादा चालाक था। और इसलिए वह एलिय्याह के सामने घुटनों के बल गिर गया और कहा, कृपया मेरी जान बख्श दो। इसमें कोई दिक्कत नहीं है; अभी यहाँ आ जाओ।

उसने पहचान लिया है कि राजा कौन है। वह अहज्याह नहीं है। वह यहोवा है।

और इसलिए, यहोवा कहता है, यह ठीक है। आगे बढ़ो, नीचे जाओ। तुम्हें अहज्याह से डरने की ज़रूरत नहीं है।

और इसलिए वह गया, और उसने राजा से कहा, श्लोक 16, क्या यह इसलिए है कि इस्राएल में कोई ईश्वर नहीं है जिससे आप सलाह ले सकें, इसलिए आपने एक्रोन के ईश्वर बाल-ज़ेबूब से सलाह लेने के लिए दूत भेजे हैं, क्योंकि आपने ऐसा किया है, आप कभी भी उस बिस्तर से नहीं उठेंगे जिस पर आप लेटे हुए हैं। आप निश्चित रूप से मर जाएँगे। उस कारण कथन पर ध्यान दें।

वह क्यों मरने जा रहा है? क्योंकि उसने यहोवा की प्रभुता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया है। अगर उसने वाकई यहोवा से सलाह ली होती तो क्या वह बच पाता? हम यह नहीं जानते। लेकिन कथन क्या है, क्योंकि तुमने यहोवा से सलाह नहीं ली है, इसलिए तुम मरने जा रहे हो।

तो, यहाँ आपके और मेरे लिए क्या सबक है? निश्चित रूप से, यह तब है जब हमारे सामने स्पष्ट प्रमाण हो कि यहोवा ही परमेश्वर है। यही समय है। दो बातें।

पश्चाताप करो और विश्वास करो। यही बात यीशु ने मरकुस अध्याय 1, पद 15 में कही है। पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो।

अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपना उद्धार का राज्य स्थापित करने के लिए आया है। पश्चाताप करो और विश्वास करो। आहाज ने इनमें से कुछ भी नहीं किया।

उसने पलटकर यह नहीं कहा, मैं मूर्ख था। विदेशी धरती पर विदेशी ईश्वर से सलाह लेना। उसे विश्वास नहीं था कि यहोवा वास्तव में ब्रह्मांड का राजा है।

परिणामस्वरूप, वह मर गया। इसलिए आपके और मेरे लिए, वचन है पश्चाताप करो और विश्वास करो, और तुम बच जाओगे। हाँ, यह अच्छी खबर है।